International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(II), April- June, 2026, pp. 211-222

रियासत कालीन जयपुर की जल संरक्षण व्यवस्था

डॉ. संगीता नागरवाल*

आचार्य इतिहास, राजकीय महाविद्यालय, बांदीकुई।

*Corresponding Author: dr.sangeetanagarwal59@gmail.com

Citation: नागरवाल, संगीता (2026). रियासत कालीन जयपुर की जल संरक्षण व्यवस्था. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(II)), 211–222.

सार

रियासत के रूप में जयपुर 1727 से 1947 तक रहा। जयपुर 12वीं शताब्दी में अस्तित्व में आया जब कछवाहा आमेर नरेश महाराज जयसिंह द्वितीय द्वारा 18 नवंबर 1727 को इसकी स्थापना की गई। इससे पूर्व कतवाहा की राजधानी आमेर थी। आमेर की बढ़ती जनसंख्या, सुरक्षा समस्या और पानी की समस्या को ध्यान में रखकर महाराजा जयसिंह द्वितीय ने आमेर का विकास करते हुए जयपुर का निर्माण किया।

शब्दकोशः *रियासत कालीन, जल संरक्षण व्यवस्था, जनसंख्या, भोगोलिक स्थिति, पेयजल।*

प्रस्तावना

जयपुर का निर्माण क्यों?

कच्छावा नरेश के पास जयपुर निर्माण के विभिन्न कारण थे जैसे की

- महाराज जय सिंह एक आधुनिक, सुरक्षित, नियोजित शहर चाहते थे जो व्यापार और कला का केंद्र भी बने।
- आमेर शहर पहाड़ियों के बीच स्थित था जिसमें भविष्य में शहर का विस्तार करना मुश्किल था।
- आमेर की भोगोलिक स्थिति के कारण वहां पेयजल की भारी कमी होने लगी थी।
- राजपूताना की बदलती परिस्थितियों, मुगल सत्ता का कमजोर होना, महाराजाओं को अपनी बढ़ती सेना और प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक खुले और बड़े स्थान की आवश्यकता थी।

इन्हीं सब कारणों से नगर के निर्माण का काम 1727 में शुरू हुआ और प्रमुख स्थानों को बनने में करीब 4 साल लगे। यह शहर नो खंडों में विभाजित किया गया कुछ विद्वानों के अनुसार ताल कटोरा के निकट स्थित शिकार की होदी से इस शहर के निर्माण की शुरुआत हुई ।इस शहर की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए साथ मजबूत दरवाजो के साथ किलाबंदी की गई और चारदीवारी बनाई गई।

1876 में महाराज राम सिंह ने इंग्लैंड की महारानी के बेटे प्रिंस ऑफ वेल्स के जयपुर आने के उपलक्ष में पूरे शहर को गुलाबी रंग से रंगवाया उसी के बाद से यह शहर गुलाबी नगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

जयपुर में जल संरक्षण की आवश्यकता क्यों ? पहले तो हम जान ले की संरक्षण है क्या –संरक्षण का अर्थ किसी वस्तु, प्राकृतिक संसाधन, पर्यावरण या धरोहर की सुरक्षा करना ,उसे बचाना या विनाश से रोकना और

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

आगे आने वाली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखना भी है यह संसाधनों का विवेक पूर्ण उपयोग ,देखरेख और प्रबंधन को दर्शाता है इसमें पर्यावरण वन्य जीव, जल, खनिज और सांस्कृतिक विरासत की रक्षा शामिल है हम यहां बात कर रहे हैं जल के संरक्षण की कि जयपुर में जल संरक्षण की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- **जल की कमी–** हम पहले ही बता चुके हैं कि जयपुर निर्माण का एक मुख्य कारण आमेर में जल की कमी भी था
- **जयपुर की भोगोलिक–** स्थिति के कारण जयपुर में जल संकट हमेशा से एक महत्वपूर्ण चुनौती रहा है। अर्ध शुष्क क्षेत्र उच्च तापमान, हल्की सर्दी और कम वर्षा (औसतन 600 मिमी वार्षिक वर्षा) के कारण यहां जल की उपलब्धता सीमित, अनियमित, अनिश्चित और अविश्वसनीय रही है।
- **जनसंख्या वृद्धि और उपभोग–** समय के साथ बढ़ती जनसंख्या ने प्राकृतिक जल संस्थानों पर दबाव डाला
- **पारंपरिक तकनीके–** जल के कुशल उपयोग के लिए ऐतिहासिक रूप से ही वर्षा जल संचयन और संरक्षण तकनीक को अपनाया गया।
- **कृषि और पेयजल की आवश्यकता–** रियासत में पेयजल आपूर्ति और कृषि दोनों के लिए पानी एक दुर्लभ संसाधन था जो भूजल स्तर को बचता था।

लेकिन हम सब जानते हैं जल ही जीवन है जल के बिना सब सुन है जल के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते मनुष्य खाना खाए बिना रह सकता है लेकिन पानी के बिना नहीं इसलिए विशेष कर जयपुर के शुष्क क्षेत्र जो पानी की किल्लत को सदियों से झेलते आ रहे हैं उनके लिए जल संरक्षण जीवन का एक अनिवार्य पहलू रहा है। इन सब परिस्थितियों के कारण जयपुर के महाराजाओं ने जयपुर निर्माण के समय जल संरक्षण को मुख्य रूप से ध्यान में रखकर ही जयपुर का निर्माण किया।

जयपुर रियासत के जल संरक्षण के उद्देश्य

जयपुर रियासत में जल संरक्षण का मुख्य उद्देश्य सुखे और अकाल का सामना करने के लिए वर्षा जल को संग्रहित कर भूजल स्तर को बढ़ाना और पीने योग्य पानी की दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित करना था इसके अलावा तालाबों ,झीलों और बावरी का निर्माण किया जाता था जो धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के साथ–साथ जल आत्मनिर्भरता का साधन भी था जयपुर रियासत में जल संरक्षण के प्रमुख उद्देश्य और प्रयास निम्न है

- **पारंपरिक जल प्रबंधन–** मानसागर झील नाहरगढ़ के पास जल महल और विभिन्न बावड़ियों में कुओं का निर्माण कर वर्षा जल का संचयन करना।
- **भूजल का पुनर्भरण–** छतो के पानी को संचित कर भूजल स्तर को बढ़ाना
- **जल आत्मनिर्भरता–** ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में पानी के टैंकरों पर निर्भरता कम करना और हर घर तक शुद्ध पेयजल पहुंचाना।
- **कृषि और पशुधन सुरक्षा–** किसानों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करना और सुखे के दौरान पशुधन के लिए पानी उपलब्ध कराना।
- **आधुनिक पहल–** परंपरागत ज्ञान के साथ आधुनिक तकनीक को अपनाना।

जयपुर रियासत में पारंपरिक जल संचयन के मुख्य उपाय–एवं विधियां

18 नवंबर 1727 को महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने जयपुर की नींव रखी थी उसमें जल संवर्धन का ध्यान रखा गया और तीनों चौपड़, बावड़िया नेहरे इसी वर्षा जल संवर्धन के उदाहरण है जयपुर की संरचना में वर्षा जल संचयन और बारिश के पानी की निकासी का विशेष तौर पर इंतजाम किया गया था शहर के नक्शे में ही वर्षा जल की निकासी और उसके संरक्षण के लिए प्रकृति के अंदर और बाहर विशेष प्रबंधन किया गया

था। आमेर में मौजूदा जल प्रबंधन प्रणालियों और महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय के जल विशेषज्ञ द्वारा जयगढ़ और नाहरगढ़ आदि में स्थापित प्रणालियां जयपुर शहर की जल प्रणाली की पृष्ठभूमि और परिणाम थे आमेर का विशाल सागर जलाशय जिसमें जल संग्रहण चबूतरे, जल प्रवेश द्वार और हाथियों द्वारा जल भार ढोने के लिए पग –दनडी मार्ग थे तथा नाहरगढ़ और जयगढ़ की जल संबंधित प्रणालियां जिनमे जल सेतु और तालाब शामिल है अब सुप्रसिद्ध है इसके अतिरिक्त ढूंढाड़ राज्य में कुआं, जलाशयों और धाराओं का उपयोग करने वाली छोटी प्रणालियां भी थी इनमें से कुछ प्रणालियों में वर्षा जल के संग्रहण बिंदुओं तक समग्र प्रवेश बहिर्वाह प्रणालियां जलसंचयन और संरक्षण प्रणालियों ,सीढ़ीदार कुओं और तालाब, झिले और जल स्थापत्य संबंधी विशेषताएं जैसे महत्वपूर्ण पहलू शामिल थे आमेर पर्वत के तलहटी में स्थित मावटा और जल निकाय और आमेर महलो से जुड़ी जल उठाने वाली संरचनाएं भी जयपुर के निर्माता के लिए परिचित थी इसके अतिरिक्त महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1730 के दशक में मनसागर झील के बीच में जल महल का निर्माण कराया था 1935 के रिकॉर्ड के अनुसार जयपुर राज्य में 240 से अधिक सिंचाई टैंक और जलाशय थे जो शहर की पानी की जरूरत को पूरा करते थे।

- **नहर** – जयपुर के पुराने शहर में भूमिगत जल नहर का एक जाल भी था जो वर्षा जल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाता था इन नेहरू से सत्ह पर वाशपीकरण रूकता था और यह सुनिश्चित होता था कि जल भंडारण क्षेत्र तक कुशलता पूर्वक पहुंचे इन भूमिगत नहर की डिजाइन फारसी और मुगल जल प्रणाली से प्रेरित थी जो विभिन्न स्थापत्य प्रभावों के मिश्रण को दर्शाती है यह प्रणाली जयपुर के ग्रेड आधारित शहरी संरचना के अनुरूप काम करते थे जिससे वर्षा के पानी की हर बूंद का सदुपयोग सुनिश्चित होता था इनमें से कुछ नहरे आज भी कार्यरत है जो प्राचीन जल संरक्षण वीधियो की मजबूती और दक्षता को दर्शाती हैं।

क्योंकि जयपुर के पास अपना वॉटर रिसोर्स नहीं था ऐसे में जयपुर वासियों की पेयजल समस्या का समाधान करने के लिए सवाई जयसिंह ने हरमाड़ा के पास से एक नेहर निकाली थी जिससे बालानंद मठ के पीछे सरस्वती कुंड में वर्षा जल का स्टोरेज होता था और जयपुर के अंदर वो नहर गोपनीय रूप से चलती थी जिसे गुप्त गंगा भी कहते थे यह नहर इतनी चौड़ी थी कि दो घुड़सवार आराम से चल सकते थे और जिस भी आदमी को जल की आवश्यकता होती थी वह छोटी चौपड़, ,बड़ी चौपड़ और रामगंज चौपड़ पर बने कुंड और मोखो से पानी ले लिया करते थे। यह नहर प्रणाली शहर में पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग 16 मील लंबी थी जो पुराने शहर में पानी वितरित करती थी और 1844 में द्रव्यवती नदी पर एक बांध बनाकर इसे मजबूत किया गया था।

- **अरावली की धाराएं–** अरावली पहाड़ियों से निकलने वाली लगभग 518 छोटी बड़ी जल धाराएं प्राकृ तिक रूप से जिलों में पानी लाती थी जिन्हें 20वी शताब्दी के मध्य तक इस्तेमाल किया जाता था।
    - **मानसागर झील–** जल महल के पास स्थित यह मानसून के दौरान आसपास की पहाड़ियों से पानी इकट्ठा करती थी और शहर के लिए जल भंडार के रूप में कार्य करती थी।
- **कृत्रिम झीलें और बांध** – अरावली की पहाड़ियों से आने वाले वर्षा जल को एकत्र करने के लिए मानसागर और अन्य तालाब बनाए गए जो जल स्तर को रिचार्ज करने का काम करते थे। मानसागर झील जयपुर की जल संरक्षण प्रणाली का एक उल्लेखनीय उदाहरण है यह जयपुर में स्थित एक कृ त्रिम झील है इसका नाम आमेर के तात्कालिक शासक राजा मानसिंह के नाम पर रखा गया था जिन्होंने इसका निर्माण कराया था जल संरक्षण के उद्देश्य से द्रव्यवती नदी पर बांध बनाकर इसका निर्माण किया गया था झील के बीचो–बीच जल महल स्थित है जो आंशिक रूप से पानी में डूबा हुआ है और शाही परिवार के लिए ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थल के रूप में कार्य करता है इस झील को क्षेत्र में पान की कमी को दूर करने के लिए प्राकृतिक वर्षा जल संचयन और जलाशय के रूप में बनाया गया

था या आसपास की अरावली पहाड़ी और और बेहतर आने वाले वर्षा जल को एकत्रित और पुनर्स्थापित करती थी जिसे भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद मिली साथ ही मानसून के अतिरिक्त पानी को रोककर शहरी बाढ़ से बचाव का काम करती थी इसमें एक ठंडा सूक्ष्म जलवायु क्षेत्र बनाया और विश्व में गर्मी में आसपास के क्षेत्र को ठंडा रखने में मदद की।

जयपुर में स्थित प्रमुख बांध है

- **रामगढ़ बांध –** यह बाणगंगा नदी पर बना एक ऐतिहासिक बांध है जो कभी जयपुर के लिए पानी का मुख्य स्रोत था नेवता बांध यह जयपुर के पास स्थित एक प्रमुख बांध है जो वर्षा जल संचयन के लिए जाना जाता है
- **चंदलाई बांध–** यह एक अन्य महत्वपूर्ण जल निकाय है जो अक्सर पक्षियों के लिए भी जाना जाता है
- **कानोता बांध** यह भी जयपुर के पास के बड़े बांधों में से एक है
- **लखवास –** बांध यह जयपुर जिले का एक बडा बांध है

- **बावडिया** – बावड़ी जल संरक्षण की सबसे प्रमुख और प्राचीन विधि है यह एक सीढ़ीदार गहरी संरचना है जो पीने नहाने और सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराती हैं इसे भूमिगत जल स्तर तक पहुंचाने के लिए बनाया जाता था बावरी अक्षर गांव के पास या शहरों में बनती थी ताकि लोगों को पीने के पानी की सुविधा मिल सके बावरी का डिजाइन ऐसा होता था कि वह वर्षा के पानी को इकट्ठा करके उसे संरक्षित रख सके। इन संरचना का निर्माण मानसून के मौसम में वर्षा जल को एकत्रित करने और सुखे महीनों के लिए उसे संग्रहित करने के लिए किया जाता था बावरिया वर्षा जल को जमीन में रिसने देती थी जिससे भूजल स्तर में वृद्धि होती थी बावरी का निर्माण पत्थर ,ईट व चुने से किया जाता था ताकि वे लंबे समय तक टिक सके बावरी में सीढ़ियों का उपयोग जल के स्तर के अनुसार नीचे जाने के लिए किया जाता था यह बावरिया ने केवल जल का संरक्षण करती थी बल्कि सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों का भी केंद्र होती थी गर्मियों के मौसम में जब अन्य स्रोत सूख जाते थे तब बावरिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। जयपुर में मध्य युग की कई अच्छी तरह से संरक्षित बावड़ी हैं इन बावड़ियों की दीवारों पर की गई जटिल नकाशी और स्थापत्य कला उस समय के कुशल कारीगरो की कारीगरी का उदाहरण है जयपुर की कुछ प्रमुख बावड़ी है
- **पन्ना मीना का कुंड,–** यह बावड़ी 17वीं शताब्दी की अत्यंत आकर्षक बावड़ी है जो आमेर में स्थित है इस बावड़ी के एक तरफ जयगढ़ और दूसरी और पहाड़ों कि नैसर्गिक सुंदरता है यह अपनी अद्‌भुत आकार की सीढ़िया, अष्टभुजा किनारो और बरामद के लिए विख्यात हैयह बावड़ी 200 फीट गहरी है और लगभग 1800 सिढिया है सीढिओ के आड़ी रेखाएं यानी की ज्यामितीय रूप से एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं अष्टकोणीय किनारे बने हैं बीच–बीच में आले बने हैं बावड़ी में नीचे तक जा सकते हैं इसके चारों किनारो पर छोटी–छोटी छतरियां और लघु देवालय इसे मनोहरी रूप प्रदान करते हैं
- **नाहरगढ़ बावड़ी–** यह 1734 में सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा निर्मित की गई थी जिसका उपयोग वर्षा जल संचयन के लिए किया जाता था यहां केवल दो तरफ सीढ़ियां हैं
- **आभानेरी की चांद बावड़ी–** आभानेरी की चांद बावड़ी सबसे प्राचीन बावड़ी तथा सबसे प्राचीन जल संरक्षण का स्रोत है लगभग 3000 वर्ष पूर्व गांव में इस प्रकार के जल संरक्षण का मिलना अपने आप में आश्चर्य से काम नहीं है इस बावड़ी का निर्माण राजा चंद द्वारा माना जाता है कहा जाता है कि यह बावड़ी 64 फीट गहरी और कहीं–कहीं 100 फीट गहरी भी है यहां पर तेरह आढी रेखाओं में सीढ़ियां जुड़ी है यह 35 मीटर वर्गाकार आकृति में बनी है यहां 3500 सीढ़ियां है ऊपर से नीचे तक पक्की बनी सीढीयो के कारण पानी का स्तर चाहे जो भी हो हमेशा आसानी से भरा जा सकता है सिढियो के

दोनों और गहरा सोपान होने के कारण इसे स्टेपवेल भी कहा जाता है सीढिया भूलभुलैया के रूप में है इन बावरी के अतिरिक्त गलताजी की बावड़ी, मांजी की बावड़ी, भांडारेज की बावड़ी ,चुलि की बावड़ी,चार घोड़े की बावड़ी,खानिया की बावड़ी भी प्रसिद्ध है जो जल संचयन का काम करती थी

झालरा आयताकार सीढ़ीदार संरचना है जो ऊंचे तालाबों झिलों रिसाव से पानी प्राप्त करती है यह पानी पीने के काम आता था झालरा झील के नीचे बना तालाब होता था जो भूजल के रिसने वाले पानी को एकत्रित करते थे। झालरा एक प्रकार का खुला सीढ़ीदार कुआ होता है जिसमें जल धरातल तक पहुंचाने के लिए सिढीयां होती थी यह संरचना प्राकृतिक जल स्रोतों से भूजल को संचित करती थी जिससे जल स्तर बना रहता था और लंबे समय तक जल उपलब्ध होता था झालरो की बनावट सुंदर होती थी और यह जल संचयन के साथ–साथ धार्मिक पर सांस्कृतिक महत्व भी रखते थे वह सामुदायिक जल स्रोत होते थे जहां लोग नहाने पीने और अन्य घरेलू उपयोग के लिए पानी लेते थे आज भी राजस्थान के कुछ जिलों में झलरे मौजूद है जो इस क्षेत्र की जल संरक्षण परंपरा की समृद्धि को को दर्शाते हैं।

कुई या बेरी

रेगिस्तानी इलाकों में बनाए जाने वाले छोटे कुएं। यह तालाब के पास बनाई गई 10– 12 मीटर गहरी संरचना थी इनका मुंह लकड़ी के फनटो से ढका रहता था जिससे कि किसी के गिरने का डर ना रहे परंपरागत जल प्रबंधन के अंतर्गत स्थानीय पानी की आपात व्यवस्था कुई या बेरी में देखी जा सकती है खेत के चारों तरफ मेड ऊंची कर दी जाती थी जिसे बरसाती पानी जमीन में समा जाता था खेत के बीच में एक छिछला कुआं खोद देते थे जहां इस पानी का कुछ हिस्सा रिसकर जमा होता था इसे काम में लिया जाता था।

छत वर्षा जल संचयन–(टाके) या कुंडी

टांका एक भूमिगत जल संग्रहण प्रणाली है जिसमें वर्षा का पानी एकत्र करके संरक्षित किया जाता था और घरों और हवेलियों के छतों से वर्षा जल को सीधे भूमिगत टैंको में जमा किया जाता था यह एक प्रकार के ढके हुए भूमिगत तालाब होते थे

जयपुर के सबसे प्रसिद्ध जल संचयन के टांके जयगढ़ किले में स्थित है जो अपनी अनूठी स्थापत्य कला और विशाल जल भंडारण क्षमता लगभग 60 लाख गैलन के लिए बनाए गए थे यह प्राचीन भूमिगत टैंक वर्षा जल संचयन की पारंपरिक तकनीक का एक बेहतरीन उदाहरण है जो मरुस्थलीय क्षेत्र में मीठा पानी जमा करने के लिए बनाए गए थे जयगढ़ किले का सबसे प्रमुख ऐतिहासिक टांका है जिसे लगभग 350 वर्ष पहले बनाया गया था जिसकी क्षमता 60 लाख गैलन करीब 3 करोड़ लीटर पानी की है इसी तरह पारंपरिक घरेलू कुंड भी जयपुर के पुराने घरों और हवेलियों के आंगन में मिलते हैं जिनमें छत का वर्षा जल एकत्रित किया जाता था इसी तरह ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक उपयोग के लिए पंचायत की भूमि पर भी सार्वजनिक टांके बनाए जाते थे इन टांकों का उपयोग मुख्य रूप से सुखे के समय और पीने के मीठे पानी की आपूर्ति के लिए किया जाता था जो आज भी भारतीय वास्तु कला की मिसाल हैं।

नेहटा (जल निकास प्रणाली)

तालाबों या नदियों में पानी भर जाने पर अतिरिक्त पानी को दूसरी जगह ले जाने के लिए नेहता का उपयोग किया जाता था।

नाहरगढ़ की जल व्यवस्था

अरावली पहाड़ियों पर स्थित नाहरगढ़ किला जयपुर की जल संरक्षण प्रणाली का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा था क्योंकि के किले उच्च स्थान पर बनाए जाते थे जहां पानी की कमी आम बात थी इसलिए वास्तुकारों ने एक जटिल वर्षा जल संचयन प्रणाली विकसित की ।नाहरगढ़ किले के चारों ओर लगभग 6 किलोमीटर के क्षेत्र में कई जल संग्रहण क्षेत्र थे। 6 बंद जल संग्रहण क्षेत्र का एक जाल छोटी नहरों से जुड़ा हुआ था जबकि

जल मार्ग और जल निकासी के लिए नहरें किले के अंदर और बाहर बनाई गई थी इन जल संग्रहण क्षेत्र के माध्यम से वर्षा जल को भूमिगत जलाशय और सीढ़ीदार कुओं में पहुंचाया जाता था इस प्रणाली से वर्षा जल का कुशलता पूर्वक संग्रहण भविष्य में उपयोग के लिए भंडारण और बर्बादी से बचाव सुनिश्चित होता था किले की भंडार क्षमता सुखे के दौरान भी निवासियों की जरूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त थी यह जल संकट से निपटने के लिए जयपुर के योजना कारों की दृष्टिकोण को दर्शाता है नाहरगढ़ के किले में एक उन्नत जल संचयन प्रणाली थी जहां से हथिनी कुंड के जरिए शहर तक पानी पहुंचाया जाता था। यह विद्या अरावली की पहाड़ियों से पानी इकट्ठा कर पीने और सिंचाई के लिए सुरक्षित रखती थी

जौहड और तालाब

बावड़ी और जलाशय के अलावा जयपुर में वर्षा जल संग्रहण के लिए जोहड यानी के छोटे बांध और तालाबों का भी उपयोग किया जाता था जोहड छोटे बांध या कच्चे चेक डैम होते थे जो वर्षा जल को रोक कर जमीन में पानी का रिसाव बढ़ाते थे । इन संरचनाओं ने भूजल स्तर को बढ़ाने और साल भर पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जयपुर की शहरी योजना में रणनीतिक स्थान पर जल निकायों को शामिल किया गया था जिससे सुनिश्चित हो सके की अतिरिक्त वर्षा जल बर्बाद होने के बजाय इन तालाबों में जमा हो । शहरीकरण के कारण इनमें से कई पारंपरिक तालाब लुप्त हो गए। लेकिन उन्हें उनके मूल स्वरूप में बचाकर रखने के प्रयास किये जा रहे हैं जैसे की ताल कटोरा, रामगढ़, जय सागर इत्यादि

नदी और पोखर

वर्षा जल संचयन के लिए सबसे पुराने और आज भी प्रचलित भंडारण दांचों में से एक है नदी यानी गांव में खोदे गए तालाब या पोखर । इनका जल संग्रहण क्षेत्र भी बड़ा होता था नदी में संग्रह चल रिसाव और गहरे रिसते जल के माध्यम से भूजल पुनर्भरण का स्रोत बनता है और आमतौर पर पशुओं और मनुष्य द्वारा पीने के लिए उपयोग किया जाता था।

नाडी

नाडी एक प्राकृतिक जल संरक्षण प्रणाली है जो वर्षा के जल को संचित करने के लिए बनाई जाती थी जो एक बड़ा तालाब होता था जिसे गांव के पास या कृषि भूमि के समीप बनाया जाता था यह 3 से 12 मीटर तक गहरी होती थी इसका मुख्य उद्देश्य था खेतो की सिंचाई, ग्रामीण जल आपूर्ति को सुनिश्चित करना होता था नदी आमतौर पर प्राकृतिक गड्ढों या निचली भूमि पर बनाई जाती थी जहां वर्षा का पानी आसानी से इकट्ठा हो सकता हो इसका पानी घरेलू उपयोग, पशुओं के पीने, तथा सिंचाई के लिए किया जाता था नदी में जमा पानी धीरे–धीरे जमीन में रिसता था जिसेसे भूमिगत जल स्तर भी बढ़ता था नदी का आकार गांव की आवश्यकता के अनुसार छोटा या बड़ा हो सकता था और यह ग्रामीण जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

खडीन

खडीन एक परंपरागत कृषि प्रणाली थी जिसका उपयोग जल संरक्षण और मिट्टी की नमी बनाए रखने के लिए किया जाता था यह एक प्रकार का बांध होता था जो भूमि के ढलान वाले हिस्से में बनाया जाता था ताकि वर्षा का पानी एकत्र होकर खेतों में फैले और नमी बनी रहे। खादीन का निर्माण ऐसे स्थान पर किया जाता है जहां वर्षा का पानी स्वाभाविक रूप से बढ़कर आता है इसमें पानी धीरे–धीरे रिसकर मिट्टी में समा जाता है जिससे फसल के लिए आवश्यक नमी बनी रहती थी यह जल संरक्षण का एक प्रभावी तरीका था जो शुष्क भूमि में भी फसलों की सिंचाई में सहायक होता था ।

कुंड –कुंडि या कुंडिया

छोटे–छोटे भूमिगत जल संग्रहण टैंक होते हैं जिनका उपयोग पीने के पानी के लिए किया जाता है कुंड मुख्य रूप से थार मरुस्थल के उन क्षेत्र में पाए जाते हैं जहा पानी की अत्यधिक कमी होती थी कुंडो को

आमतौर पर छतों से वर्षा का पानी एकत्र करके भरा जाता था इसका निर्माण गोलाकार और गहरा होता था ताकि इसमें अधिक पानी संग्रहित किया जा सके कुंड का मुहाना सकरा होता था और इसे ढक्कन से ढका जाता था ताकि पानी साफ रहे और उसमें कोई गंदगी ना जाए कुंड ग्रामीण क्षेत्र में व्यक्तिगत उपयोग के लिए बनाए जाते थे और जल संरक्षण का एक कुशल तरीका थे।

टोबा

टोबा एक महत्वपूर्ण पारंपरिक जल प्रबंध है यह नदी के समान आकृति वाला होता था यह नदी से अधिक गहरा होता था सघन संरचना वाली भूमि जिसमें पानी का रिसाव कम होता था टोबा निर्माण के लिए यह उपयुक्त स्थान माना जाता है इसका ढलान नीचे की ओर होना चाहिए । टोबा के आसपास नमी होने के कारण प्राकृतिक घास हो जाती थी जिसे जानवर चरते थे प्रत्येक गांव में जनसंख्या के हिसाब से टोबा बनाऐ जाते थे प्रत्येक जाति के लोग अपने–अपने टोबा पर झोपड़ियां बना लेते थे टोबा में वर्ष भर पानी उपलब्ध रहता था अक्टूबर में पानी कभी–कभी कम हो जाता था तो आपसी सहमति से जल का समुचित प्रयोग करते थे एक टोबा के जल का उपयोग सामान्यतः 20 परिवार कर सकते थे समय–समय पर टोबा की खुदाई करके पाइतान को बढ़ाया जा सकता था इसे गहरा किया जाता था ताकि पानी का वाषपीकरण कम हो।

जल सचेत शहरी योजना

जयपुर भारत का पहला नियोजित शहर है जिसमें जल सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई। जयपुर की योजना में उन्नत जल संरक्षण विधीयों को शामिल किया गया ताकि पानी की हर एक बूंद को इकट्ठा किया जाए, संग्रहित किया जाए और कुशलता पूर्वक उपयोग किया जाए और पानी की विकट समस्या का कुशलता पूर्वक सामना किया जाए। जयपुर की शहरी योजना ने जल संरक्षण की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है योजना में नेहरो जोहड, टांका ध्कुंडी,नाडी,खड़ीन,कुंड,झालरा,टोबा,झील

तालाबो, कुओं/कुई, जलाशयों बावड़ीयो, जलमार्गों पर विशेष ध्यान दिया गया वास्तु शास्त्र और शिल्प शास्त्र से प्रेरित शहर के भीड़ आधारित लेआउट में चौड़ी सड़के प्राकृतिक ढलान और जल संग्रहण के लिए निर्धारित क्षेत्र शामिल थे शहर को इस प्रकार स्थापित किया गया था कि इसकी स्थलाकृति का सर्वोत्तम उपयोग जल संरक्षण के लिए किया जा सके। घरों की छतें ढलान दार बनाई गई ताकि बारिश का पानी अलग–अलग भंडारण टेको में जा सके जिससे हर घर को अपनी पानी की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। निर्माण में छिद्र युक्त सामग्री का उपयोग किया गया ताकि पानी जमीन में रिस् जाए जिससे भुजल पुनर्भरण में सहायता मिले। इन प्रक्रियाओं से जल संरक्षण और शहर के अंदर और बाहर विभिन्न मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जल वितरण में मदद मिले। शहरी नियोजन के संयोजन ने जयपुर को अपने समय के सबसे अधिक जल कुशल शहरों में से एक बना दिया और शहर को उसके प्राकृतिक संसाधनों के बीच एक स्थाई संबंध को भी बढ़ावा दिया।

जयपुर की जल निकास व्यवस्था

प्राचीन जयपुर की जल विकास प्रणाली भी जल प्रबंधन व्यवस्था जैसी उन्नत और गिरिड आधारित शहरी योजना पर आधारित थी जयपुर के पुराने शहर में भूमिगत नहर का एक जाल भी था जो वर्षा जल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचा ता थ । इन नहरो से सतह पर वषपीकरण रूकता था और यह सुनिश्चित होता था कि जल भंडारण क्षेत्र तक जल कुशलतापूर्वक पहुंचे इन भूमिगत नहरो को 18 वी सदी में फारसी और मुगल वास्तु कला से प्रेरित होकर डिजाइन किया गया था यह मुगल और फारसी जल प्रणाली से प्रेरित थी जो विभिन्न स्थापत्य प्रभावों के मिश्रण को दर्शाती थी इनमें से कुछ नहरें आज भी कार्यरत हैं नाहरगढ़ किले के चारों ओर लगभग 6 किलोमीटर के क्षेत्र में कई जल संग्रहण क्षेत्र थे जल संग्रहण क्षेत्र का जाल छोटी नहर से जुड़ा हुआ था जल मार्ग और जल निकासी नहरे किले के अंदर और बाहर बनाई गई थी। शहर में पूर्व से

पश्चिम की ओर लगभग 16 मिल लंबी नहर प्रणाली थी जो पुराने शहर में पानी वितरित करती थी और 1844 में द्रव्यवती नदी पर बांध बनाकर इसे मजबूत किया गया था

अमानीषा का नाला

एक प्रमुख प्राचीन जल निकासी मार्ग था जो नाहरगढ़ की पहाड़ियों से पानी लेकर शहर के बाहर ढूंढ नदी में मिलाता था यह प्राकृतिक बारिश के पानी को बाहर निकलने में मदद करता था शहर में बरसात के दौरान नदी जल निकासी और जल भराव रोकने की योजना बनाई गई थी जो शहर की वास्तु कला के साथ एकाकार थी।

नेहटा

तालाबो या नदियों में पानी भर जाने पर अतिरिक्त पानी को दूसरी जगह ले जाने के लिए नेहेटा का प्रयोग किया जाता था।

जल संरक्षण हेतु परंपरागत विधियो के लाभ

- इससे पर्यावरण में स्थिरता आती है
- जल पुनर्भरण आसान होता है
- मिट्टी के कटाव को रोका जा सकता है
- वातावरण को संतुलित बनाए रखा जा सकता है
- जल संरक्षण की परंपरागत विधियां सामुदायिक जीवन का अभिन्न अंग रही है इन संरचनाओं का निर्माण और रखरखाव सामूहिक सहयोग पर आधारित होता है जिससे समाज में आपसी सहयोग और एकता को बढ़ावा मिलता है
- बावड़ी और नदिया केवल जल स्रोत नहीं थी बल्कि समाज की महत्वपूर्ण गतिविधि का केंद्र भी थी गांव में महिलाऐं पानी भरने के लिए बावड़ी पर जाती थी और इसी दौरान सामाजिक संवाद भी होता था यह आपसी बातचीत और संबंधों को मजबूत करने का एक माध्यम था परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियां समाज के सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपलब्ध होती थी इनका उपयोग अमीर और गरीब सभी वर्ग द्वारा किया जाता था जिससे जल संसाधनों की समान वितरण व्यवस्था सुनिश्चित होती थी इससे सामाजिक असमानता को कम करने में भी मदद मिलती थी
- परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियां कृषि के लिए जल उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिससे सिंचाई के लिए जल उपलब्धता आसान हो जाता है
- यह जल संरक्षण की विधियां अपनी कम लागत और लंबे समय तक चलने वाले इस स्रोत के लिए जानी जाती है इन संरचनाओं का निर्माण स्थानीय सामग्री और तकनीक से किया जाता है जिससे उनके रखरखाव में भी अधिक खर्च नहीं होता इनमें स्थानीय संसाधन का उपयोग होता था जिससे अतिरिक्त खर्च की आवश्यकता नहीं होती थी यह लंबी अवधि तक चलने वाली संरचनाऐ थी इनकी निर्माण तकनीक इतनी मजबूत होती थी कि यह प्राकृतिक आपदाओं को भी सहन कर सकती थी उदाहरण के लिए कई बावड़िया और जोहड सैकड़ो साल पुराने हैं लेकिन इन्हें आज भी जल संगठन के लिए उपयोग किया जा सकता हैं यह परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियों कई पिडियो तक टिकाऊ होती है
- प्राचीन जल संरक्षण प्रणालियों का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह स्थानीय लोगों को जल प्रबंधन में आत्मनिर्भर बनाती हैं लोग अपने जल स्रोतों के प्रति जिम्मेदार होते हैं और उनका संरक्षण और प्रबंधन

खुद करते हैं इन संरचनाओं का रखरखाव गांव के लोग खुद करते हैं जिससे उन्हें जल प्रबंधन के महत्व का एहसास होता है यह आत्मनिर्भरता जल संरक्षण को सतत बनाए रखने में सहायक होती है परंपरागत वीधियो का उपयोग करके स्थानीय लोग सरकार या बाहरी एजेंट के ऊपर निर्भर नहीं होते इससे जल संकट के समय भी उन्हें बहारी सहायता की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती और वे अपनी समस्याओं को खुद सुलझाने में सक्षम होते हैं

- जल संरक्षण की सबसे बड़ी आवश्यकता लाभ है कि यह जल की स्थिर आपूर्ति को सुनिश्चित करता है जहां जलवायु अत्यधिक शुष्क है और वार्षिक वर्षा की मात्रा बहुत कम होती है जो औसतन 100 से 400 मीटर के बीच होती है इस कारण यहा वर्षा का पानी ही मुख्य स्रोत होता है जो सीमित मात्रा में उपलब्ध होता है परंपरागत जल संरक्षण प्रणालियों जैसे जोहड नदी और बावड़ी जल को संचित करने में सहायक है यह संरचनाएं वर्षा के पानी को एकत्रित करती हैं और उसे दीर्घकाल तक संरक्षित रखने में मदद करती है इस पानी की उपलब्धता स्थिति बनी रहती है जिससे पीने के पानी की समस्या कम होती है जल संरक्षण की तकनीक का अन्य महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह भूजल पुनर्भरण में मदद करती हैं जौहड और नदी जैसे संरचनाएं पानी को जमीन में रिसने देती है जिससे भूजल स्तर में सुधार होता है इसके परिणाम स्वरुप जब सतेही जल स्रोत सूख जाते हैं तो भूजल का उपयोग किया जा सकता है।

- जल संरक्षण तकनीक के उपयोग से कृषि उत्पादकता में वृद्धि होती है पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियां जल को संचित करके उसे खेती के लिए उपलब्ध कराती है जिससे किसान अधिक फसल उत्पादन कर सकते हैं इस समय केवल किसानों की आजीविका में सुधार होता है बल्कि क्षेत्र के खाद्य सुरक्षा भी बढ़ती है जल संरक्षण के माध्यम से संचित किया गया पानी सुखे के समय सिंचाई के लिए उपयोग में आता है खदीन जैसी प्रणालियां से जहां वर्षा का पानी खेतों में संचित किया जाता है किसानों को सुखे के दौरान भी खेती करने में मदद करता है इससे रबी और खरीब दोनों मौसम में फसल उत्पादन में सुधार होता है जल संरक्षण के कारण जल की उपलब्धता बढ़ने से किसान अधिक विविधता वाली फैसले उगा सकते हैं पहले जहां केवल कम पानी वाली फैसले जैसे बाजरा, मूंग, उगाई जाती थी अब जल संरक्षण प्रणाली की मदद से गेहूं, चना, सरसों जैसी फैसले भी उगाई जा सकती हैं इससे किसानों की आय में वृद्धि होती है

- जल संरक्षण प्रणालियां परिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है यह प्राचीन प्रणालियां वन्य जीव और पशुओं के लिए भी जल का स्रोत होती है यह जल संरचनाएं आसपास के वनस्पतियों और जीवों के लिए भी आवश्यक जल प्रदान करती हैं जिससे पारिस्थितिकी तंत्र संतुलित रहता है जल संरक्षण से वनों और हरियाली को बढ़ावा मिलता है जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहता है जब जल स्रोतों की उपलब्धता बढ़ती है तो हरियाली और वनस्पतियां भी पनपने लगती हैं जिससे मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया को रोका जा सकता है जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से निपटने में जल संरक्षण के पारंपरिक विधियां मददगार साबित हो रही है जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा के पैटर्न में बदलाव आ रहा है जैसे सुखे की घटनाएं बढ़ रही है जल संरक्षण तकनीक के इन चुनौतियों से निपटने में मदद करती है क्योंकि यह पानी को दीर्घकाल तक संरक्षित करने में सक्षम होती है

- जल संरक्षण प्रणालियों केवल तकनीकि या भौतिक संरचनाएं नहीं है बल्कि इनका गहरा सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व भी है यह संरचनाएं सदियों से स्थानीय समुदायों के जीवन का हिस्सा रही है और सामूहिक सहयोग तथा एकता को बढ़ावा देती है पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों का निर्माण रख रखा और सामुदायिक प्रयासों से होता है गांव के लोग मिलकर इनका निर्माण करते हैं जिससे समाज में सहयोग और एकता की भावना प्रबल होती है यह सामुदायिक भागीदारी सामाजिक बंधन को

मजबूत करती है और जल संसाधनों के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी बढ़ावा देती है जल संरक्षण की परंपरागत विधियां राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है बावड़ी और जौहड जैसी संरचनाएं स्थानीय वास्तु कला और शिल्प कला का प्रतीक है इनके माध्यम से स्थानीय कार्यक्रमों की कला और शिल्प को भी संरक्षण मिलता है जिससे सांस्कृतिक धरोहर को भी बढ़ावा मिलता है पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों स्थानिकों को जल प्रबंधन के प्रति आत्मनिर्भर बनती है यह प्रणाली स्थानीय लोगों को जल की मेहता और उसके प्रबंधन के प्रति जागरुक करती हैं जिससे वे अपने जल स्रोतों की सुरक्षा और रखरखाव खुद कर सकते हैं

- पर्याप्त पानी के उपलब्धता से कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है पशु धन का संवर्धन होता है पर्यटन उद्योग का विकास होता और इन सब के कारण मनुष्य को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है
- यह जल प्रबंधन प्रणालियां मरुस्थलीकरण को रोकने में सहायक होती है
- यह प्राचीन जल प्रबंधन प्रणालियां जल संकट से निपटने में दीर्घकालिक समाधान है
- प्राचीन जल प्रबंधन प्रणालियां जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक है
- यह जल प्रणालियां भविष्य की पीडियो के लिए जल की उपलब्धता सुनिश्चित करती हैं
- राजस्थान के और जयपुर के कई शहरों में पुरानी बावरी भी अभी मौजूद है जिन्हें पुनर्स्थापित करके जल संचयन के लिए उपयोग किया जा सकता है यह शहरी जल संकट से लिपटने में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है क्योंकि शहरीकरण के कारण भूजल स्तर में गिरावट हो रही है शहरी क्षेत्र में वर्षा जल संचयन की प्रणाली को बढ़ावा दिया जा सकता है जिससे वर्षा के पानी को संरक्षित किया जा सके परंपरागत संरचनाओं का आधुनिक तकनीक के साथ संयोजन करके जल संरक्षण की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है
- आधुनिक तकनीक के साथ परंपरागत वीधियो का समन्वय करके जल संकट को खत्म किया जा सकता है
- इन जल संरक्षण प्रणाली का संवर्धन करके पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा दिया जा सकता है इत्यादि

परंपरागत जल स्रोतों की उपयोगिता

- परंपरागत जल स्रोतों का प्रबंध कर राज्य में कृषि अर्थव्यवस्था को बढ़ाया जा सकता है
- प्राकृतिक आपदा के समय इस प्रकार के जल प्रबंधन से समस्या का सामना किया जा सकता है
- पारंपरिक जल स्रोतों के माध्यम से सुखे जैसी विपदा के खिलाफ लड़ने के लिए सक्षम बना सकते हैं
- परंपरागत जल प्रबंधन की प्रणाली कृषि का एक स्तंभ बन सकती है
- परंपरागत जल स्रोतों की पुनर्स्थापना से नई पीढ़ी के लिए रोजगार के अवसर मिलेंगे
- प्राचीन जल स्रोतों का प्रबंधन करके जल की किल्लत को दूर किया जा सकता है

प्राचीन जल संरक्षण की प्रासंगिकता

पारंपरिक प्रणालियों के सामुदायिक जल प्रबंधन के कारण हर व्यक्ति की न्यूनतम आवश्यकता पूरी होती थी इन जल प्रबंधन प्रणालियों की आज आशिक प्रासंगिकता है जिन्होंने सुखे, अकाल के लंबे दोर में समुदाय को जीवन दान दिया है जल के आधुनिक प्रणाली में कमी जब महसूस होती है जब बिजली नहीं आती ,नल में पानी सूखता है बांध में मिट्टी भरने से पानी क्षमता नहीं रहती उस समय पारंपरिक प्रणालियों याद आती है देश के बहुत बड़े हिस्से में आधुनिक प्रणाली भारी लागत की वजह से पहुंच ही नहीं सकती है अथवा लोग पीने के

जल व सिंचाई के लिए परंपरागत जल प्रबंधन पर निर्भर है पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियां पुराना ढांचा नहीं है मुनाफा खोर प्रणाली से भिन्न है नलकूपों से भारी मात्रा में भूजल निकाला जा रहा है सरकारी एजेंसी को यह पता नहीं है कि सब परिस्थितियां बुनियादी मापदंडों के विपरीत है इन प्रणालियों ने सरकार पर आत्मनिर्भरता बढ़ा दी पारंपरिक प्रणालियों में सस्ती ,आसान तकनीकी का प्रयोग होता था जिससे स्थानीय लोग भी आसानी से बनाए रख सकते थे पानी आर्थिक विकास का बड़ा आधार है जल प्रबंधन प्रणाली यो का यदि व्यावहारिक क्षमता और समुदाय आधारित विकास करना है तो जल संग्रहण की प्राचीन प्रणालियों का निर्माण और संरक्षण आज भी प्रासंगिक है

परंपरागत जल प्रबंधन प्रणालियों के पतन के कारण

- बढ़ती आबादी और जल आपूर्ति की आर्थिक व्यक्तियों को लाभ पहुंचाने वाली योजनाओं को सरकारी प्रोत्साहन ने परंपरागत जल प्रबंधन प्रणालियों के रखरखाव में सक्रिय सामुदायिक भागीदारी को समाप्त कर दिया
- खेती का व्यवसायीकरण और नगदी फसलों की व्यापकता ने ऐसी प्रणालियों को नकार दिया ।
- उपनिवेश काल में निवेश की पद्धति में सिंचाई की छोटी प्रणालियों की अपेक्षा की ।
- पानी को पर्यावरण की व्यापक प्रबंधन की देन के रूप में समझने में सरकारी एजेंसी यों की असमर्थता

इन सब कारणों से प्राचीन जल स्रोतों की उपेक्षा होती ही चली गई और आज हम इसका खामियाजा भुगत भी रहे हैं

निष्कर्ष

निष्कर्षतहः रियासती जयपुर की जल संरक्षण व्यवस्था पारंपरिक तकनीकों और दूरदर्शी योजना का एक बेहतरीन उदाहरण है जिसे महाराज जय सिंह ने शहर बसाते समय शामिल किया था उन्होंने विभिन्न विधियों से जल का संग्रहण किया और जयपुर वासियों की प्यास बुझाई ।इन प्रणालियों का मुख्य उद्देश्य सुखे के समय पानी की आपूर्ति बनाए रखना और शहरी बाढ़ के जोखिम को कम करना था जो आज के समय में भी टिकाऊ एवं शहरी नियोजन के लिए एक मिसाल है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता सावित्री– राजस्थान जिला गजेटियर जयपुर 1987
2. डॉ. गुप्ता– मोहनलाल– जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक ऐतिहासिक अध्ययन, जयपुर 2010
3. रीमा आहूजा– हिस्ट्री आफ राजस्थान ,दिल्ली 2006
4. ओझा बी.एल– राजस्थान में आर्थिक पर्यावरण, जयपुर 2017
5. चौधरी रामनारायण– आधुनिक राजस्थान का उत्थान ,,अजमेर1967
6. माथुर डॉक्टर कमलेश –राजस्थान का इतिहास आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक परिपेक्ष में,जयपुर 2006
7. ओझा गौरी शंकर हीराचंद –राजपूताने का इतिहास, जयपुर 1995
8. पनगढ़िया बी.एल– राजस्थान का इतिहास, जयपुर 1996
9. शर्मा गोपीनाथ– राजस्थान का इतिहास, दिल्ली 1981
10. शर्मा कालूराम –19वीं सदी के राजस्थान का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन ,जयपुर 1974
11. शर्मा गोपीनाथ –आधुनिक राजस्थान का इतिहास, जयपुर 1994
12. शर्मा बृज किशोर –आधुनिक राजस्थान का आर्थिक इतिहास, जयपुर 1993

13. व्यास आरपी– आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास, ,जयपुर 1995
14. विकास राजेश कुमार सांस्कृतिक पर्यटन, जयपुर 2011
15. सरकार जदू नाथ –हिस्ट्री ऑफ जयपुर सी, 1503–1938, दिल्लीः 1984
16. शर्मा हनुमान– जयपुर का इतिहास, जयपुर 2022
17. गहलोत जगदीश सिंह –कछवाहो का इतिहास ,जयपुर
18. शर्मा मथुरालाल– हिस्ट्री ऑफ द जयपुर स्टेट, जयपुर 2020
19. सिंह चंद्रमणि –जयपुर राज्य का इतिहास, जयपुर 2022
20. सक्सेना ए और चंदेल बी ए.बी.एस– जयपुर शहर में जलापूर्ति प्रणाली का विश्लेषणः समस्याएं और संभावनाएं 2025
21. शर्मा ओमप्रकाश –राजस्थान की जल संस्कृति
22. शर्मा नवल किशोर –राजस्थान की पारंपरिक जल संसाधन प्रणालियां
23. बोरगोहैन अनूप– ट्रेडीशनल वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम एंड इकोलॉजिकल अप्रोच
24. जाट बी.सी, सुरेश चंद्र –राजस्थान का भूगोल जयपुर 2023
25. सक्सेना हरिमोहन –राजस्थान का भूगोल ,जयपुर 2021
26. सिंह देव पुष्यमित्र –जयपुर का इतिहास एवं पुरातत्व जयपुर 2011
27. टाकनेट डी.के –जयपुर भारत का रतन ,जयपुर2016
28. वर्मा आशा– जयपुर जिला दर्शन ई पुस्तक
29. गोखले नमिता –जयपुर जनरलस, पेंगुइन रेंडम हाउस इंडिया
30. भाटी जितेंद्र सिंह –राजस्थान के परंपरागत जल संसाधन, जयपुर 2020
31. राणावत ईश्वर सिंह– राजस्थान के जल संसाधन
32. शुक्ल चंद्र प्रकाश– मृदा जल संरक्षण एवं ड्रिप सिंचाई ,जयपुर 2016
33. शर्मा आर ए –वॉटर रिसोर्सेस इन राजस्थानः कंजर्वेशन एंड मैनेजमेंट।

❑❑❑